चीख...

चीख...

• क्रान्ति मिश्रा

समदर्शी प्रकाशन
नव-सृजन के नवीन पृष्ठ...

335, देव नगर, मोदीपुरम, मेरठ, उत्तर प्रदेश-250001

इस पुस्तक का कोई भी अंश, कहीं पर भी, बिना लेखक की
अनुमति के उद्धृत नहीं किया जाना चाहिए।

शीर्षक	:	**चीख...**
लेखक का नाम	:	क्रान्ति मिश्रा
प्रकाशक	:	समदर्शी प्रकाशन
प्रकाशन का पता	:	335, देव नगर, मोदीपुरम मेरठ, उत्तर प्रदेश- 250001 मोबाइल नम्बर : 9599323508
संस्करण	:	प्रथम (मार्च 2021)
मुद्रक	:	समदर्शी प्रकाशन, मेरठ, उत्तर प्रदेश
आईएसबीएन नम्बर	:	978-93-90481-44-6
सर्वाधिकार ©	:	क्रान्ति मिश्रा

CHEEKH Novel Written By- Kranti Mishra ₹150/-

पिता जी
स्वं श्री मिथला शरण मिश्रा
को समर्पित

अनुक्रम

किताब के बारे में	9
हर चेहरे पर दहशत	11
जब मिले पुराने दोस्त	14
सवालों की उधेड़बुन	16
सुराग की तलाश	18
जंगल में लाश का राज	21
छोटू और वो दो लोग	24
डाल में फंसे कपड़े का राज	27
लड़के की तलाश	30
सुराग का जूता	34
स्केच में छिपा चेहरा	38
शू कंपनी से मिला रास्ता	41
बूढ़ी आँखों में आँसू, चेहरे पर गुस्सा	45
मेरी गुड़िया को किसने मारा!	50
रास्ते अलग, लेकिन मंजिल एक	54
मिट्टी में लड़की का कंकाल	58
हॉस्टल और वो लड़की	62

उम्मीद का नंबर 66
ममेरे भाई की सच्चाई 70
सच की ओर एक कदम और 73
ख़ुद से ज़्यादा दोस्त से प्यार 77
सहेलियों की हत्या में कनेक्शन 81
किए पर पछतावा 86
कहानी में ट्विस्ट 90

किताब के बारे में

'चीख' कहानी है एक ऐसे ब्लाइंड मर्डर की जिसमें क़ातिल न तो कोई सुबूत छोड़ता है और न ही मरने वाली लड़की की कोई रिपोर्ट ही कहीं दर्ज़ होती है। घने जंगल में पड़ी लड़की की लाश तक इत्तेफाकन एक गाँव का भोलाभाला आदमी पहुँच जाता है। लाश का टुकड़ा देख उसकी चीख निकल जाती है। इसी चीख से जंगल के बाहर की ओर अपने जानवरों को चरा रहे अन्य ग्रामीणों को जंगल में किसी के होने का पता चलता है। डरे ग्रामीण गाँव के प्रधान के साथ मौके पर पहुँचते हैं। वहाँ बेहोश पड़े ग्रामीण को जब होश में लाया जाता है तो वह लाश के बारे में बताता है। इसकी सूचना पर पुलिस पहुँचती है। इसके बाद शुरू होती है छानबीन। कहानी उन दिनों की है जब सुराग तलाशने के बहुत संसाधन नहीं होते थे। न ही सर्विलांस की सुविधा ही थी। एक छोटी सी चौकी का इंचार्ज गाँव के प्रधान अपने दोस्त के साथ मिलकर किस तरह से इस हत्या की कड़ियों को जोड़कर असली क़ातिल तक पहुँचता है ये पढ़ने लायक है। कहानी में मर्डर के साथ ही रिश्तों का तानाबाना और दोस्ती की इंतहा का भी चित्रण किया गया है। लेखक की ये कहानी 'चीख' पूरी तरह से काल्पनिक है। कल्पना लोक में जाकर इसकी कड़ियों का ताना-बाना बुना गया है। कहानी में जिन जगहों, व्यक्तियों, संस्थाओं या फिर तौर तरीकों का जो भी जिक्र किया गया है, उनका वास्तविकता से दूर-दूर तक लेना-देना नहीं है। कहानी में इस बात का भी पूरा ध्यान रखा गया है कि इससे किसी व्यक्ति, समुदाय, धर्म या फिर कानून को किसी तरह का आघात न पहुँचे।

-क्रांति मिश्रा

हर चेहरे पर दहशत

एक घना जंगल जहाँ पेड़ के पत्तों ने ज़मीन को इस कदर अपने आगोश में ले रखा था कि सूरज की किरणें भी दिखाई नहीं पड़ रही थीं। पेड़ों के ऊपर चील कौवे झुंड में उड़ रहे थे। तभी एक चीख जंगल के सन्नाटे को चीरती है। पेड़ों पर बैठे पक्षी और बंदर शोर मचाते हुए इधर-उधर भागने लगते हैं। पहले चीख और उसके बाद पक्षियों व बंदरों का शोर सुनकर जंगल के एक सिरे पर बसे गाँव सुमेरपुर के लोग सहम उठते हैं। सभी एक दूसरे का मुँह देखते हुए जंगल की ओर रुख करने की सोचते हैं, लेकिन कोई हिम्मत नहीं जुटा पाता। लोग झुंड में जुटे हुए थे कि तभी उस गाँव के प्रधान होरई वहाँ पहुँचते हैं। ग्रामीण उसे चीख सुनाई देने के बारे में बताते हैं। इस पर होरई जंगल में जाकर देखने के लिए कहता है, लेकिन गाँव वाले जंगल के अंदर जाने की हिम्मनत नहीं दिखा पाते। होरई जिसके बाप-दादा भी इस गाँव के प्रधान रहे हैं और पिता के मरने के बाद जवानी की दहलीज पर कदम रखते ही गाँव वालों ने उसे अपना मुखिया चुन लिया था। वह काफी जीवट प्रवृति का था। उसकी कद काठी सुडौल और चेहरा रौबदार था। इसके चलते गाँव वाले उससे काफी प्रभावित और उसकी छत्रछाया में ख़ुद को महफूज़ पाते थे। गाँव वालों को डरता देख होरई ख़ुद जाने की बात कहता है। वह जैसे ही जाने के लिए आगे बढ़ता है तो गाँव के आठ-दस युवा भी उसके साथ चलने को तैयार हो जाते हैं। वे सभी जंगल की ओर बढ़ते हैं। हर किसी के मन में तरह-तरह की बातें चल रही हैं कि जंगल में क्या हुआ होगा, इतने घने जंगल में कौन गया होगा और उसके साथ क्या गुजरी होगी, वह जिन्दा होगा भी कि नहीं क्योंकि चीख या कोई मदद की गुहार दोबारा सुनाई नहीं दी थी। भरी दोपहर में जहाँ सूरज अपने चरम पर था, लेकिन जंगल में घुसते ही ऐसा लग रहा था जैसे मानों रात हो गई हो। गाँवों वाले जंगल के अंधेरे के बारे में जानते थे इसलिए टॉर्च और लालटेन साथ में ले आए थे। वे लोग धीरे-धीरे चीख वाली

दिशा में बढ़ रहे थे। जंगल के अंधेरे में झाड़ियों में हल्की सी भी सरसराहट उन लोगों के रोंगटे खड़े कर देती थी। वे जैसे ही डरते होरई उन्हें हिम्मत बँधाता और वे लोग फिर आगे बढ़ने लगते। अंधरे में उन लोगों को दिशा भ्रम हो चुका था। बाहर से साधारण सा दिखने वाला जंगल अंदर से किसी भूलभुलैया की तरह था। जब वे लोग काफी अंदर चले गए तो उन्हें समझ में नहीं आ रहा था कि चीख वाली जगह पर पहुँचने के लिए किधर जाएँ। एक जगह पर वो लोग रुक जाते हैं। होरई सभी लोगों से, मशवरा करता है ताकि उस जगह तक पहुँचने के लिए सभी दिशा में बढ़ा जाए। लेकिन डर के मारे किसी की समझ में कुछ नहीं आ रहा था। थोड़ी देर सोचने के बाद होरई तय करता है कि वे लोग जिस दिशा में चल रहे थे उसी पर थोड़ा और आगे बढ़ेंगे, अगर कोई मिल गया तो ठीक नहीं तो वापस गाँव लौट जाएंगे। इसके बाद सभी एक साथ आगे बढ़ लिए। होरई आगे-आगे और बाकी गाँव वाले डर के मारे इधर-उधर देखते हुए उसके पीछे-पीछे। अभी वो लोग थोड़ा आगे बढ़े ही थे कि अचानक उनकी नज़र एक बूढ़े हो चले भारी भरकम पेड़ की जड़ पर बदहवास से पड़े एक व्यक्ति पर पड़ी। गाँव वालों ने एक-दूसरे का चेहरा देखा, लेकिन उसकी ओर बढ़ने की हिम्मत कोई नहीं जुटा पा रहा था। होरई एक बार फिर आगे बढ़ा और औंधे मुँह पड़े उस व्यक्ति को अपने मज़बूत बाजुओं से सीधा किया। उसके चेहरे पर नज़र पड़ते ही गाँव वाले एकदम से बोल पड़े ''अरे इ तो आपन मंगलू है।'' पहचान में आने पर गाँव वालों का डर थोड़ी देर के लिए मानों गायब हो गया। सभी ने उसको घेर लिया और उसे होश में लाने की कोशिश की जाने लगी। थोड़ी देर की कोशिश और पानी के छीटों से मंगलू होश में आया, लेकिन फिर उतनी ही तेज चीख के साथ बेहोश हो गया। उसकी चीख सुनकर सभी लोग डर गए। यहाँ तक कि होरई भी एक बार को सहम गया, लेकिन फिर ख़ुद को संभालते हुए उसे होश में लाने कि कोशिश करने लगा ताकि यह पता चल सके कि वह अकेला इतने घने जंगल में अंदर तक कैसे पहुँचा और उसने ऐसा क्या देख लिया कि डर के मारे उसे होश ही नहीं आ रहा है। खैर थोड़ी ही कोशिश के बाद मंगलू को होश आ गया। उसने बेहद डरी नज़रों से आस-पास खड़े लोगों की ओर देखा। अपने गाँव के लोगों को पास पाकर उसका डर कुछ कम हुआ, लेकिन उसकी आवाज़ अब भी नहीं निकल पा रही थी। होरई ने मंगलू की हिम्मत बंधाते हुए उससे जंगल में आने और चीखने का कारण जानना चाहा, लेकिन वह कुछ बोल नहीं पाया। होरई और गाँव वालों की काफी कोशिशों के बाद उसने हाथ उठाकर अंगुली से एक ओर इशारा किया। मंगलू की अंगुली उठते ही उसे घेरे खड़े गाँव वाले दो तरफ बंट गए, जैसे वे किसी को निकलने के लिए रास्ता दे रहे हों। सभी की नज़रें मंगलू की अंगुली की ओर थीं, लेकिन वहाँ आस-पास कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था। उन लोगों ने मंगलू से फिर पूछ कि उस ओर है क्या? कोई जानवर तो नहीं देख लिया। इस बीच मंगलू होरई की मजबूत बांहों के सहारे खड़ा हो चुका था। होरई ने उसे फिर हिम्मत बढ़ाई और उधर क्या है यह पूछा। इस बार मंगलू ने उस ओर

चलने के लिए इशारा किया। इस पर होरई उसे अपने कंधे का सहारा देते हुए उसी ओर चल दिया जिधर वह इशारा कर रहा था। सभी गाँव वाले साथ थे, लेकिन सभी के मन में तमाम शंकाएं तैर रही थीं। झाड़ियों को बल्लम लगी लाठियों के सहारे किनारे करते हुए वे लोग आगे बढ़े। मंगलू के दिखाए रास्ते पर थोड़ा आगे जाने पर एक जगह अचानक होरई रुक गया। हड़बड़ाकर अपना पैर पीछे किए। होरई को हड़बड़ाते देख बाकी सब गाँव वाले भी डर गए। सभी की नज़र होरई के पैरों की ओर गईं। होरई ने अपने हाथ में ली हुई लाठी से ज़मीन पर पड़े हुए पत्तों को एक ओर किया तो उसके चहरे पर भी डर तैर गया। वहाँ मीन पर पत्तों के नीचे एक हाथ पड़ा हुआ था। होरई ने हिम्मत की और नीचे झुककर उस हाथ को ध्यान से देखा तो वह किसी महिला का हाथ था क्योंकि हाथ में सोने के कंगन और अंगुली में चमकदार सोने की अंगूठी थी। हाथ देख गाँव वाले उससे जल्दी से जल्दी वापस जाने के लिए बोले। गाँव वालों को डर था कि जिस जानवर ने उस लड़की का यह हाल किया है वह उन्हें भी मिलने पर नहीं छोड़ेगा। होरई चूंकि पढ़ा-लिखा था इसलिए वह हाथ को ध्यान से देखने लगा। लाठी से उसने हाथ को पलटा और गाँव वालों की ओर मुखातिब होता हुआ, बोला ''यह किसी जानवर का काम नहीं लगता है।'' इससे पहले कि गाँव वाले कुछ बोलते उन लोगों की नजर मंगलू पर पड़ी, वह बुरी तरह सहमा हुआ जंगल में एक ओर एकटक देखे जा रहा था। होरई और गाँव वालों ने उससे डर का कारण पूछा तो वह बिना कुछ बोले आगे की ओर इशारा करने लगा। उसकी हालत देखकर उन लोगों को इतना तो समझ में आ गया था कि उसकी चीख इस हाथ को देखकर नहीं निकली थी। उसने इससे भी ज्यादा डरावना कुछ देखा था। यह बात ज़हन में आते ही होरई मंगलू को कंधे का सहारा देकर उस ओर बढ़ा जिधर वह इशारा कर रहा था। वहाँ से वो लोग करीब डेढ़ सौ कदम और चले होंगे कि एक लड़की औंधे मुँह पड़ी दिखाई दी। उसके शरीर पर चिपकी हुई जींस और जैकेट थी। बाल कटे हुए और पैरों में काले रंग के जूते। उसका एक हाथ गायब था। होरई को समझते देर नहीं लगी कि जो हाथ उसने जंगल में पीछे देखा था वह उसी लड़की का था। एक बात उसकी भी समझ में नहीं आ रही थी कि आख़िर इतने घने जंगल के बीचों बीच वह लड़की आई क्यों और आई तो उसकी मौत कैसे हुई?

❖

जब मिले पुराने दोस्त

लाश देखकर डरे गाँव वालों को होरई ने किसी तरह संभाला और उसे छूने से मना किया। फिर उसने उन्हीं में से कुछ लोगों को गाँव वापस जाकर पुलिस को ख़बर करने को कहा। पहले तो गाँव वाले डर रहे थे, लेकिन जब उसने उन्हें समझाया तो वो जाने को राजी हो गए। गाँव वाले डरते घबराते जंगल से बाहर आकर गाँव पहुँचते हैं और गाँव के दूसरी ओर एक झोपड़ी में नाम के लिए बनी चौकी में मौजूद दीवान टीकाराम को पूरी बात बताते हैं। टीकाराम अकेले जंगल में जाने को तैयार नहीं होता है, लेकिन जंगल में लाश मिलने की सूचना वह वहाँ से करीब 20 किलोमीटर दूर बने अपने थाने के इंचार्ज अमित चौहान को देता है। अमित तुरंत आने की बात कहकर टीकाराम को गाँव वालों के साथ जंगल के बाहर मिलने की हिदायत देता है। टीकाराम गाँव वालों को लेकर जंगल के बाहर पहुँचते हैं, थोड़ी देर बाद अमित भी और पुलिसवालों के साथ गाड़ी से वहाँ पहुँच जाता है। जंगल घना और बेतरतीब होने के चलते अमित चौहान को अपनी जीप वहीं छोड़नी पड़ती है और वह अपनी टीम व गाँव वालों के साथ पैदल ही जंगल के अंदर चल देता है। पुलिस को सूचना देने आए गाँव वालों ने जंगल से बाहर आते समय रास्ते में जगह-जगह निशान लगा दिए थे, ताकि वो लोग कहीं भटक न जाएं। इन्हीं निशानों के सहारे थोड़ी ही देर में पुलिस की टीम और गाँव वाले लाश वाली जगह पर पहुँच जाते हैं। वहाँ पहुँचते ही अमित होरई से मिलता है। दरअसल होरई का असली नाम हीरा सिंह है और वह अमित के साथ चंडीगढ़ में एक ही कॉलेज में पढ़ता था। दोनों गहरे दोस्त थे। पढ़ाई पूरी होने से पहले ही हीरा के पिता की मौत हो जाती है जिसके चलते उसे गाँव आना पड़ता है। गाँव आने के बाद वह दोबारा शहर नहीं जा पाता और अपने प्रधान पिता की जिम्मेदारियों को अपने मजबूत कंधों पर लेकर गाँव वालों का होरई बनकर उनके भले के लिए काम करने लगता है। अमित होरई से कहता है कि उसे उम्मीद ही नहीं

थी कि दोनों की मुलाकात इन परिस्थितियों में होगी। होरई अमित को चीख सुनाई देने से लेकर लाश मिलने तक का पूरा किस्सा सुनाता है। पूरी कहानी सुनने के बाद अमित गाँव वालों को लाश से दूर रहने और वहाँ पर किसी भी चीज़ को न छूने की हिदायत देता है। अमित लाश के करीब जाकर उसे पलटता है तो एकदम से उछलकर पीछे आ जाता है। दरअसल लाश का चेहरा बुरी तरह से जलाकर बिगाड़ा गया था। मरने वाली लड़की ने जो जैकेट पहनी थी वह आगे से खुली थी। अंदर सफेद रंग की शर्ट थी, जिस पर पेट और सीने पर कटे के निशान थे, शर्ट के पीछे के घावों से निकला खून शर्ट पर सूख चुका था। लड़की का एक हाथ गायब था। होरई ने तुरंत अमित को हाथ के बारे में बताया, तो वह उस ओर लपका जहाँ हाथ पड़ा था। उसने अपने रुमाल की मदद से पकड़कर हाथ उठाया और लड़की की लाश के उस ओर रखा जिधर हाथ गायब था। वह हाथ लड़की का ही था। अमित ने लड़की के कपड़ों की जाँच की, लेकिन उसके हाथ कोई सुराग नहीं लगा जिससे लड़की की पहचान हो सके। उसने गाँव वालों को थोड़ा पीछे एक ओर खड़ा करके अपनी पुलिस टीम के साथ लाश वाली जगह के आस-पास बारीकी से नज़र दौड़ाई, लेकिन वहाँ न तो उसकी पहचान से जुड़ी कोई चीज़ मिली और न ही यह पता चल पाया कि वह यहाँ पहुँची कैसे? रात हो रही थी और घंटों की मशक्कत के बाद भी जब कोई फायदा न मिला तो अमित ने पुलिस वालों से लाश को सील करवाकर बाहर ले चलने को कहा। ख़ुद अमित ने उस जगह की हदबंदी कर दी ताकि आगे उस जगह को पहचाना जा सके और सुबुतों की तलाश या और किसी जाँच में जगह का भ्रम न हो। इसके बाद पुलिस टीम और गाँव वाले जंगल के बाहर आ गए। रात बहुत हो चुकी थी इसलिए होरई ने अमित व अन्य पुलिस वालों को गाँव में ही रुकने को कहा, लेकिन अमित फिर आने का वादा करके वहाँ से चला गया। शहर जाकर अमित ने लाश को पोस्टमार्टम के लिए भिजवा दिया।

❖

सवालों की उधेड़बुन

लड़की बीच जंगल में कैसे पहुँची और उसे किसने मारा इस सवाल ने न तो अमित और न ही होरई को सोने दिया। अगले दिन सुबह होरई मंगलू के घर जा पहुँचा और उससे जंगल के घटनाक्रम के बारे में पूछा। मंगलू ने उसे बताया कि वह जंगल के पास अपने जानवर चराने ले गया था। उनको चरता छोड़ वह मैदान में लेट गया तो उसकी आँख लग गई। जब वह उठा तो उसके जानवर गायब थे, उसने सोचा कि वे जंगल में चले गए होंगे। उन्हीं की तलाश में वह जंगल में गया था और भटकते-भटकते वह उस जगह पहुँच गया। घने जंगल में लाश देखकर वह इतना डर गया कि चीखने के साथ ही बदहवाश दौड़ लगा दी और एक पेड़ के पास गिर पड़ा। बाद में जब उसे होश आया तो गाँव वाले पास खड़े थे। वह यह बता ही रहा था कि तभी अमित वहाँ दो पुलिस वालों के साथ पहुँच गया। अमित ने लाश को सबसे पहले देखने वाले के बारे में पूछा तो होरई ने मंगलू की ओर इशारा कर दिया। पुलिस को देख मंगलू डरने लगा तो होरई ने उसे समझाया। अमित ने भी उसे हिम्मत बंधाते हुए पूरी बात बताने के लिए कहा। मंगलू ने अमित को भी वही बात बताई। उसकी पूरी बात सुनने के बाद अमित ने पूछा कि क्या उसने किसी और को वहाँ आते या फिर वहाँ से जाते देखा। इस पर मंगलू ने किसी को भी देखने से इनकार कर दिया। अमित ने और भी गाँव वालों से जंगल के आस-पास किसी अज़नबी या नए चेहरे को देखने के बारे में पूछा, तो सभी ने इनकार कर दिया। इसी बीच अमित के पास एक सिपाही पोस्टमार्टम रिपोर्ट लेकर आता है। वह रिपोर्ट पढ़ना शुरू करता है तो होरई उसे घर चलकर आराम से पढ़ने को कहता है। इस पर सभी लोग होरई के घर की ओर चल देते हैं। होरई के घर के दरवाज़े पर बड़ी सी खुली जगह थी जहाँ तखत, खटिया और कुछ कुर्सियां पड़ी थीं। सभी लोग वहाँ जाकर बैठ गए। होरई ने आवाज़ लगाई तो घर के अंदर से एक लड़का आया जिसके कान में होरई ने कुछ कहा

और वह वहाँ से चला गया। सभी लोग शांत बैठे थे और अमित पोस्टमार्टम रिपोर्ट पढ़ने में व्यस्त था। रिपोर्ट की जैसे-जैसे लाइनें बढ़ती जा रहीं थी अमित की त्योरियाँ चढ़ रहीं थीं। उसके चहरे को देखकर गाँव वाले भांप गए थे कि रिपोर्ट में कोई गंभीर बात है। थोड़ी देर बाद रिपोर्ट पूरी पढ़ने के बाद अमित गुस्से में बड़बड़ाने लगा। इसी बीच घर के अंदर से लड़का हाथ में पानी और कुछ खाने की चीज़े लेकर बाहर आया और होरई के सामने रख दी। होरई ने मिठाई की प्लेट अमित की तरफ बढ़ाने के बाद लड़कें को दे दी कि वह सबको पानी पिला दे। लड़का गाँव वालों की तरफ बढ़ गया तो होरई पानी का गिलास अमित की ओर बढ़ते हुए बोला, ''भाई ऐसा क्या आया पोस्टमार्टम में जो इतना गुस्सा लग रहे हो क्या लड़की की पहचान हुई?'' न में सिर हिलाते हुए अमित दांत पीसते हुए बोला, बेचारी को बहुत बेरहमी से मारा गया है। पेट में एक के बाद एक तीन बार चाकू से वार किए गए और हर वार के साथ अंदर चाकू को इस तरह घुमाया गया ताकि आंतें कट जाएं। यही नहीं सीने पर भी चाकू से कई वार किए गए। हाथ भी किसी तेज धार वाली चीज़ से एक झटके में ही काट दिया गया।'' अमित की बात सुनकर सभी लोग भौंचक्के थे। सभी के दिमाग़ में एक ही सवाल था कि लड़की थी कौन और उसकी इतनी बुरी तरह से हत्या क्यों की गई? इन सवालों का जवाब किसी के पास नहीं था।

❖

सुराग की तलाश

अमित एक बार फिर जंगल में उस जगह जाना चाहता है जहाँ लड़की की लाश मिली थी। वह होरई और मंगलू से भी साथ चलने के लिए कहता है। इस पर गाँव के और लोग भी जंगल में उनके साथ जाने को तैयार हो जाते हैं। पुलिस की टीम और गाँव वाले जंगल की ओर बढ़ते हैं। जंगल के पास पहुँचकर वह लोग बाहर ही रुक जाते हैं। जंगल की भयावहता देखकर एक बार को सभी के अंदर सिहरन दौड़ जाती है। सबसे पहले अमित जंगल में अंदर की ओर बढ़ता है। उसके पीछे होरई और होरई के पीछे पुलिस तथा गाँव वाले। भरी दोपहरी में भी जंगल के अंदर अमावस की रात जैसा घुप अंधेरा ऊपर से जंगली जानवरों के हमले का डर सभी अंदर से सहमे हुए थे। सभी लोग एक दिन पहले लगाए गए निशानों के सहारे ही आगे बढ़ रहे थे। इसी बीच सभी ठिठककर रुक जाते हैं। सामने कई काली परछाइयाँ दिखाई देती हैं जो उनकी ओर ही तेजी से बढ़ रहीं थीं। गाँव वाले वापस भागने को होते हैं तो होरई उन्हें इशारे से अपनी जगह खड़े रहने और शोर न मचाने का इशारा करता है। गाँव वाले जहाँ के तहाँ खड़े हो जाते हैं। इसके बाद होरई अमित से कान में कुछ कहता है और अमित अपने साथ आई पुलिस टीम को कुछ समझाता है। अमित से बात होने के बाद सभी पुलिस वाले एक लाइन में आगे खड़े हो जाते हैं। धीरे-धीरे वह विशालकाय परछाइयाँ नज़दीक आती जाती हैं। जैसे वही वो उन लोगों से चंद कदमों की दूरी पर होती हैं पुलिस वाले एक साथ टार्च की रोशनी परछाइयों पर डालते हैं। सामने जंगली हाथियों का झुंड था जो टार्च की तेज़ रोशनी से अपनी दिशा बदल देता है और देखते ही देखते जंगल में कहीं गायब हो जाता है। हाथियों के वहाँ से जाने के बाद सभी राहत की साँस लेते हैं और फिर घटनास्थल की ओर बढ़ते हैं।

थोड़ी ही देर में सभी वहाँ पर होते हैं जहाँ लड़की की लाश मिली थी। अमित ने तेज़

नज़रों से वहाँ चारों ओर का एक बार में मुआयना कर लिया। उस जगह पर सब कुछ वैसा ही था जैसा वो लोग छोड़कर गए थे। वहाँ पर लगे पेड़ों के ऊपर के पत्ते कुछ हल्के थे जिसके चलते सूरज की रोशनी पत्तों के बीच से छनकर जमीन तक आ रही थी। सूरज की रोशनी के चलते वहाँ आसपास की चीज़ों को आसानी से देखा जा सकता था। अमित के इशारे पर होरई ने गाँव वालों को एक जगह पर ही खड़े रहने को कहा ताकि कहीं अगर कोई सुराग हो तो उन लोगों के चलने से खत्म न हो जाए। अमित बहुत ही बारीकी से उस जगह को देखता है। उसके दिमाग़ में एक ही चीज़ चल रही थी कि क़ातिल ने कोई न कोई सबूत तो ज़रूर छोड़ा होगा। लाश मिलने वाली जगह का बारीकी के साथ मुआयना करने के बाद भी अमित या उसकी टीम के हाथ कुछ नहीं लगा। उन लोगों की समझ में नहीं आ रहा था कि वह लड़की और हत्यारे उस घने जंगल में पहुँचे कैसे? वे किधर से आए कि न तो उन्हें किसी ने जंगल में आते हुए देखा और न ही किसी गाड़ी या फिर पैरों के ही कोई निशान मिले थे। हाँ एक बात ज़रूर थी कि जिस जगह पर लाश मिली थी वहाँ जमीन पर पड़े पत्ते बुरी तरह से कुचले हुए थे। उन्हें देख के लग रहा था जैसे वहाँ कई लोग दौड़े हों। खैर इन कुचले पत्तों। को तो अमित मान रहा था कि गाँव वालों के पैरों से कुचल गए होंगे। कई घंटे तक घटनास्थमल और उसके आसपास की खाक छानने के बाद वे लोग वापस जाने का मन बनाते हैं। सभी वापस गाँव की ओर चल पड़ते हैं। गाँव पहुँचकर अमित अपनी टीम के साथ वापस जाने लगता है तो होरई उन्हें खाने के लिए कहता है, लेकिन अमित फिर किसी दिन खाना खाने की बात कहकर वहाँ से चल देता है। अमित जंगल से चला ज़रूर आया था, लेकिन उसके दिमाग़ में जगल का ही सीन चल रहा था। उसके दिमाग़ को एक ही चीज़ परेशान किए जा रही थी वह लड़की और हत्यारों का जंगल में पहुँचना। वह लोग थोड़ी देर में ही थाने पहुँच जाते हैं।

टीम के अन्य सदस्य खाना खाने और फ्रेश होने चले जाते हैं, लेकिन अमित अपने ऑफिस में जाकर बैठ जाता है। अपनी कुर्सी पर बैठा वह शून्य में खोया हुआ था कि तभी चाय वाले छोटू की खनकती आवाज़ से चौंक जाता है। छोटू उसके लिए चाय लेकर आया था। वह छोटू को चाय मेज़ पर रखकर जाने को कहता है। छोटू बिना कुछ बोले चाय मेज़ पर रखकर वहाँ से चला जाता है। उसके जाने के बाद अमित मेज़ पर ढककर रखे गिलास को उठाकर मुँह से लगाता है और एक साँस में खत्म कर देता है। फिर चाय का गिलास उठाकर चुस्कियाँ लेने लगता है। दो-तीन चुस्कियों के बाद अचानक उसे कुछ सूझता है और वह चाय का गिलास मेज़ पर रख अपनी अलमारी खोलकर उसमें कुछ तलाशने लगता है। कुछ फाइलें पलटने के बाद एक फाइल लेकर वह फिर अपनी कुर्सी पर आकर बैठ जाता है और चाय का गिलास एक हाथ में लेकर चुस्कियों के साथ

पूरा पढ़ने की लिए अपनी किताब आज ही खरीदें